In the name of Allah the Most Gracious the Ever Merciful

بسم اللہ الرحمن الرحیم

Press Desk
Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)

شعبہ پریس اینڈ میڈیا بھارت
Office Press & Media
Ahmadiyya Muslim Jama'at India,
Qadian-143516, Distt.Gurdaspur, Punjab, India.
Mobile: +91-99887 57988
Email: pressamjindia@gmail.com
Tel: +91-1872-500282
ahmadiyya_press ahmadiyyapressindia

(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

ازیرحوالہ/Ref **374**
تاریخ/Date **26-12-2025**

प्रैस नोट

मुस्लिम जमाअत अहमदिया का 130वां सालाना जलसा
प्रेम सौहार्द, अमन शांति और रूहानियत में तरक्की का प्रतीक।

कादियां जिला गुरदासपुर 26 दिसंबर 2025

मुस्लिम जमाअत अहमदिया का 130वां सालाना जलसा अहमदिया मुख्यालय कादियां ज़िला गुरदासपुर में शुक्रवार 26 दिसंबर से 28 दसंबर आयोजित हो रहा है।

जमाअत अहमदिया भारत के प्रवक्ता श्री. के तारिक अहमद ने जारी प्रैस नोट में कहा है कि आज से 134 वर्ष पूर्व 1891 में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्जा ग़ुलाम अहमद साहिब ने अल्लाह से आदेश पाकर सभी कौमों में अमन शांति और सौहार्द को बढ़ावा देने के लिये इसकी बुनियाद रखी थी।

इस रूहानी जलसे का उद्देश्य अपने पैदा करने वाले के साथ वास्तविक और रूहानी तौर पर जुड़ना है और आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना है। यह जलसा कोई सांसारिक मेलों की तरह नही बल्कि अपना एक विशेष महत्व रखता है।

यह वह रूहानी इकठ है जिसमें भाग लेने के लिये सच्चाई के परवाने दूर दराज़ क्षेत्रों से अपने सांसारिक उद्देश्य को छोड़ कर सच्चाई और रूहानियत की तलाश में कई कठिनाईयां सहन करके देश विदेश से यहां आते हैं।

संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्जा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहीसलाम जलसे के संद्रर्भ में कहते हैं।

"इस जलसे का उदेश्य जमाअत के लोगों का एक दूसरे से बार बार मिलना, अपने अंदर नेक तबदीली पैदा करना और ख़ुदा के बताए मार्ग पर चलते हुए परहेज़गार, नर्मदिल और मानवता के आदर्शों पर गुज़ारना है।"

इस तीन दिनों में जलसे में ऐसे भाषणों का प्रबंध होता है जिस से रूहानीयत मज़बूत होती है और इसमें भाग लेने वाला मनुष्य अपने अंदर एक नया जोश और जीवन को महसूस करता है जो धार्मिक और नैतिकता को ताज़गी बख्शता है।

इस जलसे के माध्यम से अहमदिया मुस्लिम जमाअत यह संदेश देती है कि अपने पैदा करने वाले की तरफ झुको और "मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नही" के नियमों अनुसर अपने जज़बात और एहसास का सम्मान करो और मानवजाति के कल्याण और मानवता की भलाई के लिये अपना योगदान डालो।

भाषण 1: उद्घाटन भाषण — आदरणीय रफ़ीक़ अहमद मालाबारी साहब, सदर मजलिस तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन अहमदिया क़ादियान

उद्घाटन भाषण का सारांश:
इस भाषण में महोदय ने जलसा सालाना की आध्यात्मिक महत्ता और उसकी वैश्विक व्यापकता को उजागर करते हुए बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलेहिस्सलाम द्वारा स्थापित इस बरकत वाले इज्तिमा की नींव अल्लाह तआला के विशेष फ़ज़ल से रखी गई थी, और जो अल्प संख्या से आरंभ होकर आज दुनिया भर में हज़ारों प्यासे दिलों की रूहानी तृप्ति का माध्यम बन चुका है। भाषण में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इरशादात की रोशनी में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि जलसा सालाना का मूल उद्देश्य इस्लाम, आँहज़रत ﷺ और क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त करना, तक़्वा, दुआ, इबादत, इस्लाह-ए-नफ़्स तथा नैतिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण है, न कि केवल सामाजिक मेल-जोल। साथ ही यह इज्तिमा आपसी प्रेम, परिचय, नए और पुराने लोगों के रूहानी संबंधों को मज़बूत करने, मरहूमीन के लिए सामूहिक दुआओं और सम्मिलित होने वालों के लिए विशेष दुआओं का अवसर प्रदान करता है। अंत में दुआ की गई कि अल्लाह तआला जमाअत को इन बरकतों का सच्चा वारिस बनाते हुए ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के बरकत भरे दौर में सच्चे इस्लाम के प्रभुत्व का साक्षात्कार प्रदान करे।

भाषण 2: शीर्षक: जीवित ख़ुदा का प्रमाण — नबियों के प्रभुत्व की रोशनी में
आदरणीय मुहम्मद हमीद कौसर साहब, नाज़िर दावत इलल्लाह मरकज़िया क़ादियान

सारांश:
यह भाषण इस केंद्रीय बिंदु पर केंद्रित था कि **"नबियों अलैहिमुस्सलाम का प्रभुत्व अल्लाह तआला के जीवित और सर्वशक्तिमान होने का उज्ज्वल प्रमाण है"**, जिसकी पुष्टि क़ुरआन-ए-करीम की आयतों और इतिहास-ए-अंबिया की घटनाओं से की गई। भाषण में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और आँहज़रत ﷺ के उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि तीव्र विरोध, अत्याचार और षड्यंत्रों के बावजूद अल्लाह तआला ने सदैव अपने चुने हुए नबियों को सफलता और प्रभुत्व प्रदान किया। साथ ही यह भी बताया गया कि वर्तमान युग में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम की बअसत और जमाअत-ए-अहमदिया की वैश्विक उन्नति उसी ईश्वरीय वादे की निरंतरता है—जहाँ 136 वर्षों के विरोध के बावजूद जमाअत का दुनिया भर में फैल जाना, विरोधियों की असफलता और ख़ुदाई समर्थन इस सत्य की घोषणा हैं कि **"अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल अवश्य प्रभुत्व प्राप्त करेंगे।"** अंत में दुआ की गई कि अल्लाह तआला मानवता को सत्य को पहचानने और अपने रब से सच्चा संबंध स्थापित करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

भाषण 3: शीर्षक: सीरत-ए-आँहज़रत ﷺ
(धार्मिक सहिष्णुता और स्वतंत्रता-ए-ज़मीर के संदर्भ में आँहज़रत ﷺ की शिक्षाएँ और उस्वा)
आदरणीय मुहम्मद इनाम गौरी साहब, नाज़िर-ए-आला व अमीर मक़ामी, क़ादियान

सारांश:

इस भाषण में क़ुरआन-ए-करीम तथा आँहज़रत ﷺ के इरशादात और उस्वा-ए-हसना की रोशनी में धार्मिक सहिष्णुता और स्वतंत्रता-ए-ज़मीर की समग्र इस्लामी शिक्षाओं को विस्तार से प्रस्तुत किया गया। इनके अनुसार इस्लाम किसी भी प्रकार के धार्मिक दबाव, ज़बरदस्ती या घृणा की अनुमति नहीं देता; बल्कि सभी नबियों पर ईमान, पड़ोसियों और ग़ैर-मुस्लिमों के साथ सद्व्यवहार, समझौतों की पाबंदी, मानव जीवन और सम्मान का आदर, तथा मतभेदों के बावजूद शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की शिक्षा देता है।

भाषण में राज्य-ए-मदीना, ईसाई वफ़्द-ए-नजरान, यहूद और मुशरिकीन के साथ नबी करीम ﷺ की दया, क्षमा और न्याय पर आधारित व्यावहारिक उदाहरणों को उजागर करते हुए स्पष्ट किया गया कि इस्लामी युद्ध रक्षात्मक थे, न कि धर्म फैलाने के लिए। साथ ही हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम की बअसत और **"पैग़ाम-ए-सुल्ह"** के संदर्भ में अंतर-धार्मिक सौहार्द, एकता और मानवीय सहानुभूति की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया।

अंततः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इरशादात के अनुसार यह बताया गया कि वर्तमान युग में घृणा, हिंसा और उग्रवाद के उन्मूलन का एकमात्र समाधान यही है कि दुनिया क़ुरआन-ए-करीम की शांति-प्रद शिक्षाओं और आँहज़रत ﷺ के उस्वा-ए-रहमत को अपनाए तथा धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करे।

भाषण संख्या 4: शीर्षक: सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

(इश्क़-ए-इलाही की रोशनी में)

आदरणीय हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़ साहब, एडिशनल नाज़िर-ए-आला, दक्षिण भारत

सारांश:

यह भाषण इश्क़-ए-इलाही, क़ुर्ब-ए-ख़ुदावंदी और वह़ी-ए-इलाही के जीवित सिलसिले के विषय पर केंद्रित था। इसमें स्पष्ट किया गया कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम, विशेष रूप से आँहज़रत ﷺ, अल्लाह तआला की पूर्ण प्रेम और आज्ञापालन का सर्वोच्च नमूना थे, और इसी पूर्ण इत्बा (अनुसरण) के परिणामस्वरूप हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को मसीह मौऊद और इमाम महदी के पद पर नियुक्त किया गया।

भाषण में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन, इबादतों, कशूफ़ व इल्हामात, क़बूलियत-ए-दुआ के असंख्य निशानों और आपके माध्यम से जीवित ख़ुदा के प्रकटन को विस्तार से बयान करते हुए इस तथ्य पर ज़ोर दिया गया कि आज भी अल्लाह तआला वह़ी, इल्हाम और ताईदात के माध्यम से अपने अस्तित्व का इज़हार फ़रमा रहा है। साथ ही यह बताया गया कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया, विशेष रूप से **हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़** की क़ियादत में, जमाअत-ए-अहमदिया पर उसकी जीवित ताईदात और क़बूलियत-ए-दुआ के करिश्मे दुनिया के सामने उज्ज्वल प्रमाण के रूप में प्रकट हो रहे हैं।

अतः यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि मानवता की मुक्ति, आध्यात्मिक उन्नति और सच्ची मआरिफ़त-ए-इलाही का मार्ग ख़िलाफ़त से वाबस्तगी, दुआ और रसूल ﷺ की पूर्ण आज्ञापालन में निहित है।

भाषण संख्या 5: शीर्षक: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान और प्रतिष्ठा

आदरणीय मुनीर अहमद ख़ादिम साहब, एडिटर साप्ताहिक बदर, क़ादियान

सारांश:

इस भाषण में क़ुरआन-ए-करीम, अहादीस-ए-नबविया ﷺ और अकाबिर-ए-उम्मत के संदर्भों की रोशनी में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के स्थान और प्रतिष्ठा को स्पष्ट किया गया कि आप आँहज़रत ﷺ के बुरूज़-ए-कामिल, मसीह मौऊद और महदी मआहूद हैं, जिनकी बअसत की भविष्यवाणियाँ क़ुरआनी आयत **وَاٰخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ**, सहीह बुख़ारी और अन्य प्रामाणिक कुतुब में मौजूद हैं।

भाषण में बताया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में आँहज़रत ﷺ के चमत्कार पुनः प्रकट हुए, जिनमें रमज़ान में ख़ुसूफ़ व कुसूफ़, अन्य आकाशीय निशानियाँ और वैश्विक परिस्थितियाँ शामिल हैं, जो आपकी सत्यता का स्पष्ट प्रमाण हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि जमाअत-ए-अहमदिया और उसका निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त, ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नुबूवत का व्यावहारिक सिलसिला है, जिसके माध्यम से आज इस्लाम की आध्यात्मिक प्रसार दुनिया के 220 से अधिक देशों तक पहुँच चुका है।

अंत में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस **अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़** के इरशादात की रोशनी में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि उम्मत-ए-मुस्लिमा की मुक्ति, विश्व शांति और इस्लाम के प्रभुत्व का एकमात्र मार्ग ख़िलाफ़त से मज़बूत वाबस्तगी, तक़्वा, दुआ और उच्च नैतिकता की स्थापना में निहित है।

अंत में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इरशादात की रोशनी में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि उम्मत-ए-मुस्लिमा की मुक्ति, विश्व शांति और इस्लाम के प्रभुत्व का एकमात्र मार्ग ख़िलाफ़त से मज़बूत वाबस्तगी, तक़्वा, दुआ और उच्च नैतिकता की स्थापना में निहित है।

प्रैस नोट समाप्त

Tariq Ahmad K
Incharge Press & Media,
Ahmadiyya Muslim Jama'at India.
Mobile: +91-9988757988.